CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन

अंजू कुमावत
बी.एड. एम.एड. छात्रा
डॉ. आरती गुप्ता
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
Email : anjukumawat098@gmail.com, Mobile- 9694932898

First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध अध्ययन का विषय "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन" है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से अनेक नवीन कार्यक्रमों एवं योजनाओं को प्रोत्साहित किया है, जिनमें नवभारत साक्षरता कार्यक्रम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज के अशिक्षित एवं निरक्षर वयस्कों को साक्षर बनाना, उनमें बुनियादी शिक्षा कौशल विकसित करना तथा उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्यापकों में नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति जागरूकता के स्तर का विश्लेषण करना है, क्योंकि किसी भी शैक्षिक नीति अथवा कार्यक्रम की सफलता में अध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि अध्यापक इस कार्यक्रम के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली, उपयोगिता एवं समाज पर उसके प्रभाव के प्रति किस सीमा तक जागरूक हैं। यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। अध्ययन हेतु चयनित नमूने में विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है। तथ्यों के संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया जाएगा। अध्ययन से अपेक्षा है कि यह अध्यापकों की जागरूकता के वास्तविक स्तर को स्पष्ट करेगा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत संचालित साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को समझने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही यह शोध भविष्य में नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करेगा।

मुख्य शब्दः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नवभारत साक्षरता कार्यक्रम, अध्यापक, जागरूकता, साक्षरता, शिक्षा।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन की सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत प्रक्रिया है। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के समग्र विकास का साधन भी है। शिक्षा मनुष्य को अज्ञानता से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा असत्य से सत्य की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है। यह मनुष्य को केवल पढ़ना–लिखना सिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसके विचारों, व्यवहार, दृष्टिकोण, चरित्र और जीवन मूल्यों का निर्माण करती है। इसी कारण शिक्षा को मानव जीवन की आधारशिला कहा जाता है।

मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही शिक्षा का महत्व स्वीकार किया गया है। प्राचीन काल में भी समाज में ज्ञान और शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उस समय शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं था, बल्कि व्यक्ति को नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से सक्षम बनाना था। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाई जाती थी। उसे यह बताया जाता था कि वह अपने जीवन में किस प्रकार आदर्श मूल्यों को अपनाकर समाज के लिए उपयोगी बन सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारत सरकार द्वारा नव भारत साक्षरता कार्यक्रम (2022–2027) की शुरूआत की गई थी, जिसका लक्ष्य 15 वर्ष से अधिक आयु के सभी व्यक्तियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्रदान करना है। भविष्य में यह शोध इस बात का गहन विश्लेषण करेगा कि शिक्षकों की इस कार्यक्रम के प्रति जागरूकता किस स्तर की होगी तथा किस प्रकार वे नीति के अनुरूप योगदान देने के लिए तैयार होंगे। यह प्रस्तावना यह स्पष्ट करता है कि साक्षरता केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित न रहकर डिजिटल, वित्तीय और जीवनोपयोगी कौशल को भी सम्मिलित करती है।

शिक्षा नीति 2020 में साक्षरता को एक बहुआयामी आवश्यकता के रूप में देखा गया है, इसके तहत पांच प्रमुख घटक निम्न है–

1. प्राथमिक साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान
2. जीवन कौशल
3. डिजिटल साक्षरता
4. वित्तीय साक्षरता
5. नागरिक साक्षरता

यह कार्यक्रम वर्ष 2022 से 2027 तक चरणबद्ध रूप से लागू किया जा रहा है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्यापक जो इस व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, कितने जागरूक और प्रतिबद्ध हैं। प्रस्तावित शोध भविष्य में अध्यापकों की जागरूकता का गहन अध्ययन करेगा। इसमें यह जाना जाएगा कि क्या वे नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के उद्देश्यों को समझते हैं, क्या वे इसके विभिन्न घटकों को लागू करने की क्षमता रखते हैं, और क्या वे स्वयं इस कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रेरित हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी देखा जाएगा कि क्या उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण, संसाधन और प्रशासनिक सहयोग मिल रहा है।

अध्ययन का औचित्य

अध्ययन का औचित्य इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में शिक्षा और ज्ञान का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। आधुनिक समाज में व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए साक्षर होना आवश्यक है। यदि नागरिक साक्षर नहीं होंगे तो वे अनेक अवसरों और सुविधाओं से वंचित रह जाएंगे। इसलिए साक्षरता कार्यक्रमों को प्रभावी बनाना अत्यंत आवश्यक है, और इसके लिए अध्यापकों की भूमिका को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

अंततः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन न केवल शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक विकास के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। यह अध्ययन नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का मूल्यांकन करके कार्यक्रम की प्रभावशीलता को समझने में सहायता करेगा तथा भविष्य में साक्षरता कार्यक्रमों को अधिक सफल

बनाने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करेगा। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन का महत्व

नवभारत साक्षरता कार्यक्रम का उद्देश्य देश के उन वयस्क नागरिकों को साक्षर बनाना है जो किसी कारणवश औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से पढ़ना, लिखना और गणना करना जैसे मूलभूत कौशल विकसित करने के साथ–साथ नागरिकों को जीवनोपयोगी ज्ञान और जागरूकता प्रदान की जाती है। इस पूरे प्रयास की सफलता में अध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ होते हैं और उनके माध्यम से ही शिक्षा की वास्तविक पहुँच समाज के प्रत्येक वर्ग तक संभव हो पाती है। इसलिए नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन में अध्यापकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। सबसे पहले अध्यापक साक्षरता कार्यक्रम के प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। वे शिक्षार्थियों को पढ़ना–लिखना और गणना करना सिखाने के साथ–साथ उन्हें शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता भी बनाते हैं। वयस्क शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कई बार कठिन और संकोचपूर्ण होता है, क्योंकि वे लंबे समय तक शिक्षा से दूर रहे होते हैं। ऐसी स्थिति में अध्यापक उन्हें प्रेरित करते हैं, उनका आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और सीखने के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करते हैं। इस प्रकार अध्यापक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले ही नहीं होते, बल्कि वे प्रेरणा और प्रोत्साहन के स्रोत भी होते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

1. **विकास शर्मा (2020) विषयः प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का अध्ययन**

   उद्देश्यः प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का विश्लेषण करना। शिक्षकों की भूमिका और शिक्षण विधियों का अध्ययन करना। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करना।

   निष्कर्षः शिक्षकों की सक्रिय भूमिका शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाती है। गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की रुचि बढ़ती है। विद्यालयी संसाधनों की उपलब्धता से सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं।

2. **आर. के. शर्मा (2021) विषयः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और प्रारंभिक साक्षरता का महत्व**

   उद्देश्यः इस अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को दिए गए महत्व का अध्ययन करना था। इसके साथ ही यह भी जांचा गया कि शिक्षक इस नीति के उद्देश्यों से कितने परिचित हैं और वे इसे अपने कक्षा शिक्षण में किस प्रकार लागू करते हैं। अध्ययन में शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता, विद्यालयी वातावरण और शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका का भी विश्लेषण किया गया।

   निष्कर्षः अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश शिक्षक प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के महत्व को समझते हैं, लेकिन कई विद्यालयों में संसाधनों की कमी के कारण कार्यक्रम का पूर्ण क्रियान्वयन नहीं हो पाता। शिक्षक प्रशिक्षण और शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता से कार्यक्रम की प्रभावशीलता बढ़ाई जा सकती है।

3. **मीना अग्रवाल (2022) विषयः प्राथमिक विद्यालयों में संख्यात्मक ज्ञान का विकास**

   उद्देश्यः इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के गणितीय कौशल के विकास की स्थिति का अध्ययन करना था। इसके साथ ही यह भी देखा गया कि शिक्षक गणितीय अवधारणाओं को समझाने के लिए किस प्रकार की शिक्षण विधियों का उपयोग करते हैं। अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य यह भी था कि गतिविधि आधारित शिक्षण, समस्या समाधान आधारित शिक्षण और खेल आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की गणितीय उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।

   निष्कर्षः अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि यदि गणित शिक्षण को गतिविधि आधारित बनाया जाए तो विद्यार्थी गणितीय अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझ पाते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण और पर्याप्त शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता से गणित शिक्षण अधिक प्रभावी बनता है।

4. **ममता शर्मा (2023)**

   उद्देश्यः साक्षरता कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना। शिक्षकों की जागरूकता का विश्लेषण करना। विद्यार्थियों की सीखने की उपलब्धि का अध्ययन करना।

   निष्कर्षः साक्षरता कार्यक्रम से विद्यार्थियों की पढ़ने की क्षमता बढ़ी। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सहायक है। शिक्षण नवाचारों से सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं।

5. **नीलम वर्मा (2025) विषयः प्राथमिक विद्यालयों में प्रारंभिक साक्षरता के विकास में शिक्षकों की भूमिका**

   उद्देश्यः प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की साक्षरता क्षमता का अध्ययन करना। शिक्षकों की शिक्षण विधियों और उनकी जागरूकता का विश्लेषण करना। साक्षरता विकास में गतिविधि आधारित शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

   निष्कर्षः अध्ययन में पाया गया कि गतिविधि आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की पढ़ने–लिखने की क्षमता में सुधार होता है। शिक्षक की जागरूकता साक्षरता कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया।

शोध अंतराल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम को वयस्क शिक्षा, मूलभूत साक्षरता, जीवनोपयोगी कौशल तथा सतत शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन में अध्यापकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा अध्यापकों की जागरूकता पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु अधिकांश शोध केवल NEP 2020 के सामान्य प्रावधानों एवं शिक्षकों की समग्र जागरूकता तक सीमित रहे हैं। उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की विशिष्ट जागरूकता, समझ, दृष्टिकोण तथा क्रियान्वयन संबंधी तैयारी पर पर्याप्त शोध कार्य नहीं हुआ है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के अध्यापकों के मध्य जागरूकता स्तर, प्रशिक्षण की उपलब्धता, कार्यक्रम की उपयोगिता तथा व्यवहारिक चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन बहुत कम देखने को मिलता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध अंतराल को भरने का प्रयास करेगा, जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि अध्यापक नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति कितने जागरूक हैं तथा इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में उनकी जागरूकता किस प्रकार सहायक है।

समस्या कथन

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक प्राथमिक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक जीवन कौशल के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक डिजिटल साक्षरता के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक वित्तीय साक्षरता के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक नागरिक साक्षरता के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक प्राथमिक साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के प्रति महिला एवं पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक जीवन कौशल के प्रति महिला एवं पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक डिजीटल साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक वित्तीय साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के घटक नागरिक साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

कार्यप्रणाली :

- **शोध में प्रयुक्त अनुसंधान विधि:** प्रयुक्त शोधकार्य की समस्या को भली–भांति समझकर अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन कर अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया जायेगा।
- **जनसंख्या:** प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।
- **शोध मे प्रयुक्त न्यादर्श:** प्रस्तुत अध्ययन हेतु कुल 200 अध्यापकों का चयन किया गया, जिसमें से 100 पुरुष अध्यापक एवं 100 महिला अध्यापक सम्मिलित है। न्यादर्श चयन नियत न्यादर्श विधि से किया गया है।
- **शोध में प्रयुक्त उपकरण:** प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्तों का संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया जायेगा। इस हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली का निर्माण किया जायेगा। यह प्रश्नावली नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के पांच घटको के आधार पर निर्माण किया जायेगा – प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान, जीवन कौशल, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, नागरिक साक्षरता से सम्बन्धित प्रश्नों पर आधारित है।

विश्वसनीयता

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त जागरूकता मापन प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु क्रोनबाख अल्फा विधि का प्रयोग किया गया। प्राप्त विश्वसनीयता गुणांक 0.82 रहा, जो उपकरण की उच्च आंतरिक संगति को दर्शाता है। अतः प्रश्नावली अध्ययन हेतु विश्वसनीय पाई गई।

वैधता

उपकरण की वैधता सुनिश्चित करने के लिए विषय–वस्तु वैधता का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली को शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा परीक्षणोपरांत अनुमोदित किया गया। विशेषज्ञों के सुझावानुसार संशोधन करने के पश्चात उपकरण को अध्ययन हेतु वैध माना गया।

- **शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी:–** मध्यमान, मानक विचलन, टी-परीक्षण

डाटा विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1 प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के प्रति अध्यापक व पुरुष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

व्याख्या एवं विश्लेषण :– उपरोक्त सारणी के अनुसार पुरुष शिक्षकों का माध्य (Mean = 4.40) महिला शिक्षकों (Mean = 4.30) की अपेक्षा थोड़ा अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षकों में प्रारम्भिक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के प्रति जागरूकता का स्तर हल्का–सा अधिक है, किन्तु यह अंतर बहुत अधिक नहीं है। मानक विचलन (SD) की दृष्टि से पुरुष शिक्षकों (0.80) में महिला शिक्षकों (0.64) की तुलना में अधिक विचलन पाया गया, जो यह दर्शाता है कि पुरुष शिक्षकों के उत्तरों में विविधता अधिक है, जबकि महिला शिक्षकों के उत्तर अपेक्षाकृत अधिक समान हैं। टी–परीक्षण (t–value = 0.69) का मान अत्यंत कम है, जो सामान्यतः 0.05 स्तर पर आवश्यक सार्थकता मान (लगभग 1.96) से काफी कम है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि दोनों समूहों के बीच पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। इस प्रकार, यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना–2 जीवन कौशल के प्रति महिला एवं पुरूष अध्यापकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

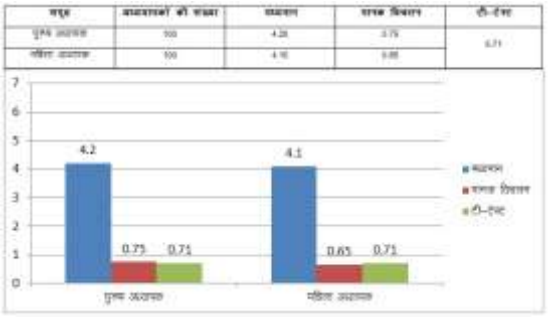

व्याख्या एवं विश्लेषण :– प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पुरुष शिक्षकों का माध्य (4.20) महिला शिक्षकों (4.10) से थोड़ा अधिक है। यह अंतर अत्यंत मामूली है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों की जागरूकता लगभग समान है। मानक विचलन में पुरुष शिक्षकों (0.75) का मान महिला शिक्षकों (0.65) से अधिक है, जो दर्शाता है कि पुरुष शिक्षकों के विचारों में थोड़ी अधिक विविधता है। टी–परीक्षण का मान (t = 0.71) पुनः बहुत कम है और यह निर्धारित मान (1.96) से कम है। अतः यह अंतर भी सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन (insignificant) है। अतः यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है कि जीवन कौशल के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना–3 डिजिटल साक्षरता के प्रति महिला व पुरूष शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

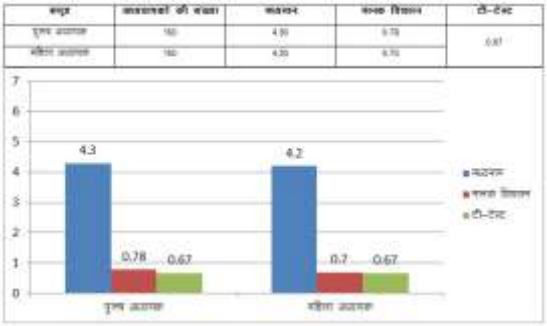

व्याख्या एवं विश्लेषण :– इस परिकल्पना में पुरुष शिक्षकों का माध्य (4. 30) महिला शिक्षकों (4.20) से थोड़ा अधिक है। यह इंगित करता है कि पुरुष शिक्षक डिजिटल साक्षरता के प्रति कुछ हद तक अधिक जागरूक हैं, परन्तु यह अंतर अत्यधिक नहीं है। मानक विचलन पुरुष शिक्षकों (0. 78) में अधिक है जबकि महिला शिक्षकों (0.70) में अपेक्षाकृत कम है, जो उत्तरों की स्थिरता को दर्शाता है। टी–परीक्षण का मान (t = 0.67) बहुत कम है और यह भी 0.05 स्तर पर सार्थकता के मान से नीचे है। अतः दोनों समूहों के बीच का अंतर महत्वपूर्ण नहीं है। इस प्रकार यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है कि डिजिटल साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना–4 वित्तीय साक्षरता के प्रति महिला व पुरूष शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

व्याख्या एवं विश्लेषण :– पुरुष शिक्षकों का माध्य (4.25) महिला शिक्षकों (4.15) से थोड़ा अधिक है। यह दर्शाता है कि पुरुष शिक्षकों में वित्तीय साक्षरता के प्रति जागरूकता का स्तर थोड़ा बेहतर है, लेकिन यह अंतर बहुत सीमित है। मानक विचलन के अनुसार पुरुष शिक्षकों (0.76) में अधिक फैलाव है जबकि महिला शिक्षकों (0.68) में अपेक्षाकृत कम।

टी–परीक्षण का मान (t = 0.69) पुनः बहुत कम है और यह आवश्यक स्तर (1.96) से कम है। अतः यह अंतर भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि वित्तीय साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना–5 नागरिक साक्षरता के प्रति महिला व पुरुष शिक्षकों की जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

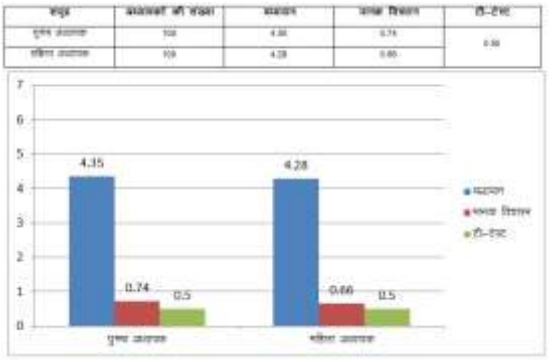

व्याख्या: इस परिकल्पना में पुरुष शिक्षकों का माध्य (4.35) महिला शिक्षकों (4.28) से थोड़ा अधिक है। यह दर्शाता है कि पुरुष शिक्षकों में नागरिक साक्षरता के प्रति जागरूकता कुछ अधिक है, किन्तु यह अंतर बहुत कम है। मानक विचलन पुरुष शिक्षकों (0.74) में अधिक है जबकि महिला शिक्षकों (0.66) में कम, जो उत्तरों की स्थिरता को इंगित करता है। टी–परीक्षण का मान (t = 0.50) अत्यंत कम है, जो यह स्पष्ट करता है कि दोनों समूहों के बीच का अंतर पूर्णतः असार्थक (non–significant) है। इस प्रकार यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है कि नागरिक साक्षरता के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिणाम :

प्रस्तुत अध्ययन में नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत पांचों घटकों–प्राथमिक साक्षरता एवं संख्यात्मक

ज्ञान, जीवन कौशल, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता तथा व्यावसायिक कौशल के प्रति पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता का प्रतिशत लगभग समान पाया गया है।

पांचों घटकों के प्रतिशत को सम्मिलित करने पर पुरुष शिक्षकों की औसत जागरूकता 88.4% तथा महिला शिक्षकों की 88.1% पायी गई है। दोनों समूहों के प्रतिशत में अंतर अत्यंत न्यून (लगभग 0.3%) है, जो यह दर्शाता है कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता का स्तर लगभग समान है। यह समानता इस बात का संकेत देती है कि दोनों समूहों को समान प्रशिक्षण, संसाधन एवं शैक्षिक अवसर प्राप्त हो रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है और सभी परिकल्पनाएं स्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष:

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति अध्यापकों को कार्यक्रम की सामान्य जानकारी तो है, परन्तु इसके सभी घटकों–प्राथमिक साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान, जीवन कौशल, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता तथा व्यावसायिक कौशल–की गहन एवं व्यावहारिक समझ समान रूप से विकसित होते हुए ही कुछ हद तक

सीमित पायी गई। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों को समान प्रशिक्षण, संसाधन एवं अवसर प्राप्त हो रहे हैं, जिसके कारण उनकी जागरूकता में संतुलन बना हुआ है। तथापि, कार्यक्रम के विभिन्न घटकों की गहन समझ एवं प्रभावी क्रियान्वयन के लिए निरन्तर प्रयासों की आवश्यकता बनी हुई है।

अतः नीति–निर्माताओं एवं शैक्षिक संस्थानों को चाहिए कि वे समय–समय पर प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ एवं

जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करें, ताकि अध्यापक इस कार्यक्रम की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी रूप से समझकर उसका सफल क्रियान्वयन कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थः

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न हैं–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की जागरूकता संतोषजनक पायी गई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक इस कार्यक्रम के उद्देश्यों एवं घटकों को समझते हैं तथा इसके प्रभावी क्रियान्वयन में सहायक हो सकते हैं।
- अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की जागरूकता में कोई विशेष अंतर नहीं है, जिससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षा प्रणाली में समान प्रशिक्षण एवं अवसर उपलब्ध हैं।
- शिक्षकों में कार्यक्रम के विभिन्न घटकों–प्राथमिक साक्षरता, जीवन कौशल, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता एवं व्यावसायिक कौशल–की जानकारी होने के कारण वे विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूकता यह दर्शाती है कि शिक्षकों में तकनीकी संसाधन के उपयोग की क्षमता विकसित हो रही है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।
- जीवन कौशल एवं व्यावसायिक कौशल के प्रति जागरूकता विद्यार्थियों को व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करने में सहायक है।
- वित्तीय साक्षरता के प्रति शिक्षकों की समझ विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होती है।
- अतः आवश्यक है कि समय–समय पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ, जिससे वे इस कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी रूप से लागू कर सकें।

भावी शोध हेतु सुझाव

- भविष्य में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के मध्य जागरूकता के स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है।
- वर्तमान अध्ययन केवल शिक्षकों तक सीमित है, अतः भविष्य में विद्यार्थियों के स्तर पर इस कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- बड़े नमूने पर अध्ययन करके अधिक विश्वसनीय एवं व्यापक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।
- विभिन्न राज्यों या जिलों के स्तर पर इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के विभिन्न घटकों का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव अध्ययन किया जा सकता है।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता एवं उनके व्यावहारिक उपयोग का गहन अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
- कोठारी, सी. आर. (2019). अनुसंधान पद्धति। नई दिल्लीः विश्व प्रकाशन।
- एन.सी.ई.आर.टी. (2021). नवभारत साक्षरता कार्यक्रम (उल्लास) मार्गदर्शिका। नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के. पी. (2020). शिक्षा में नई नीतियाँ और उनका प्रभाव। लखनऊः शिक्षा भारती।
- शिक्षा मंत्रालय (2022). नवभारत साक्षरता कार्यक्रमरू कार्यान्वयन रूपरेखा। भारत सरकार।
- शर्मा, आर. के. (2021). भारतीय शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव। आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
- सिंह, एम. पी. (2022). वयस्क शिक्षा एवं साक्षरता कार्यक्रम। जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- यू.जी.सी. (2021). शिक्षक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली।
- वर्मा, एस. (2021). शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ। मेरठः इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस।